फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **337** 1/– *जुलाई* **2016**

सण्डे संघर्ष

ताऊ, आपको एक विचित्र बात सुनाता हूँ।

अरे क्या हुआ ? तुम्हारी फैक्ट्री में कुछ विवाद चल रहा था न ?

अरे सुनो तो ताऊ, कुछ नये आविष्कार हुये हैं।

मतलब ?

संघर्ष का दिन अब रविवार है।

अरे ! इसका क्या मतलब हुआ ? कुछ रोचक चीज बता रहे हो क्या ?

देखिये, रविवार को, सण्डे को ज्यादातर फैक्ट्रियों में छुट्टी रहती है। प्रोडक्शन बन्द रहता है। और, आपको यह भी पता होगा कि सरकारी दफ्तर बन्द रहते हैं।

हाँ, इतवार को तो ज्यादातर की छुट्टी ही रहती है।

ताऊ, इसीलिये तो रविवार संघर्ष का सबसे बढिया दिन है। यह नेताओं ने आविष्कार किया है। इस दिन आप सरकारी दफ्तर के सामने धरना दो, भाषण दो, पर्चा बाँटो, भूख हड़ताल करो, तो सब खुश रहते हैं। उत्पादन पर कोई असर नहीं पड़ता। कम्पनी को नुक्सान नहीं होता, कोई नाराज नहीं होते। सरकारी अफसरों पर कोई दबाव नहीं, कोई तनाव नहीं।

यह हमारे साथ कोई ऊट-पटाँग कल्पना फेंट रहे हो क्या ?

अरे नहीं ताऊ! यह है आज का संघर्ष। जब भी मजदूरों का उभार बनी-बनाई सीमाओं को चीरने लगता है तो बोला जाता है कि संगठित हो, एकता बनाओ, एक आवाज में बोलो, और समझौता वार्ता के लिये दबाव बनाओ। और समझौता वार्ता आजकल सण्डे को ही हो रही हैं।

प्रतिनिधि, नेता, वाद-विवाद, समझौता वार्ता क्या इतने खोखले हो चुके हैं ?

ताऊ, बात यह है कि कार्यस्थल पर मिल कर हर रोज जो पगडंडियाँ बनती हैं, बनाते हैं, तलाशते हैं उनका दबाव तो मैनेजमेन्ट पर रहता ही है, यह कई बार निर्णायक भी हो जाता है और व्यापक भी हो जाता है। जैसे बेंगलुरू में अप्रैल में महिला गारमेन्ट मजदूरों ने किया।

हाँ, अभी एक साथी बोल रहे थे कि मिश्र और ट्युनिशिया में बहुत सारे कार्यस्थलों पर वरकरों ने कब्जे हटाये थे।

ताऊ, यह खबर नहीं पहुँचती। पहुँचती है इसके बाद की खबर। डराने-धमकाने की बातें और प्रतिनिधियों-नुमाइन्दों-नेताओं की बातें।

अब समझ में आया ! पगडंडियों के उभार के पैमाने बड़े होते जा रहे हैं, तीव्रता लिये हुये हैं। और, प्रतिनिधित्व में विश्वास, प्रतिनिधियों का आत्म-विश्वास सिकुड़ रहे हैं।

ताऊ, ठीक समझे। प्रतिनिधित्व आपको सण्डे के संघर्ष तक ही ले जा सकता है। मेरे सवाल यह हैं : हमारी पगडंडियों के जटिल-गतिशील-व्यापक तानेबाने प्रतिनिधियों को बाईपास क्यों नहीं कर पाते ? इनके चक्कर में फँस क्यों जाते हैं ? इन्हें बाईपास कैसे करें ?

यह सवाल तो बहुत मजेदार और टक्कर के हैं।

बहुत कमजोर औ

1948 में संसद में जो न्यूनतम वेतन अधिनियम पारित किया था उसके अनुसार आज न्यूनतम वेतन 50-60 हजार रुपये महीना बनता है।

ओवर टाइम के पैसे तनखा के दुगुनी दर से देने का कानून है। हरियाणा में एक घण्टे ओवर टाइम के अकुशल श्रमिक के 78 रुपये बनते हैं। दिल्ली में एक घण्टे ओवर टाइम के अकुशल श्रमिक के 92 रुपये बनते हैं।

हरियाणा सरकार द्वारा 1 जनवरी 2016 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 7976 रुपये मासिक (8 घण्टे के 307 रुपये)
कुशल ब 9695 रुपये मासिक (8 घण्टे के 373 रुपये)
उच्च कुशल श्रमिक 10,179 रुपये मासिक (8 घण्टे के 392 रुपये)

होरिजॉन इन्डस्ट्रीयल प्रोडक्ट्स (45 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मई की तनखा 7 जून को दे रहे थे तब सब मजदूरों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। प्लान्ट हैड आया और बोला कि जनवरी से देय डी ए के बारे में अभी लैटर नहीं आया है, पत्र आते ही एरियर के साथ पैसे दे देंगे।

जे एल ऑटो इन्डस्ट्रीज (14 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 हैल्परों की तनखा 5100 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की और रविवार को भी काम , हैल्परों को ओवर टाइम के 20 रुपये प्रतिघण्टा।

निओलाइट इन्डस्ट्रीज (396 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और मई में तीन रविवार को भी 12-12 घण्टे की ड्युटी। मजदूर ओवर टाइम के घण्टे लिख कर रखते हैं फिर भी हर महीने ठेकेदार कम्पनी तथा एच आर वाले मिल कर 200-400 रुपये हर वरकर के खा जाते हैं।

परसनल क्रियेशन (वाई-1, वाई-2 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 6000 रुपये और टेलर की 9600 रुपये। ई एस आई तथा पी एफ 300 मजदूरों में 50-52 के ही हैं।

बुन्डी (39-40 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मारुति सुजुकी वाहनों के पार्ट्स बनाने वाली बी टी ए लाइन पर रोज 16 घण्टे ड्युटी, ओवर टाइम 32 रुपये प्रतिघण्टा, रोटी के लिये पैसे नहीं। टोयोटा लाइन पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम 40-45 रुपये प्रतिघण्टा। सी आई डी और ऑटो लाइनों पर 12-13½ -14½ -16 घण्टे रोज ड्युटी।

कल्पना फोरजिंग (36 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 6600 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की (कभी-कभी 10-10, 11-11 घण्टे की)। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

आकृति क्रियेशन्स (410 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9, रात 11, अगली सुबह 5½ बजे तक ड्युटी। अब ऑफ सीजन में ही महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। उत्पादन स्विटजरलैण्ड, जर्मनी, फ्रान्स को निर्यात होता है।

सोलर प्रिन्टिंग प्रैस (डी-16/2, डी-10/7 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में 200 मजदूरों की ही ई एस आई तथा पी एफ। बिना ई एस आई तथा पी एफ वाले 400 में हैल्परों को 8 घण्टे के 250-260 रुपये और कारीगरों को 310-350 रुपये।

स्टेकुलम प्लास्ट (241 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में फरवरी में स्टाफ के 60 लोगों ने 20 रुपये प्रतिघण्टा में ओवर टाइम से इनकार कर दिया। तब से स्टाफ की 8-8 घण्टे की 3 शिफ्ट और मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम 30-35 रुपये प्रतिघण्टा। स्टाफ की तनखा 10-12-15 हजार रुपये पर पी एफ की राशि मई की तनखा में भी 7600 रुपये पर ही काटी। जनवरी से देय डी ए नहीं दिया है।

वी जी कौशिको (126 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में जनवरी से देय डी ए नहीं दिया है, हैल्परों की तनखा 7600 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

दिल्ली सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2016 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 9568 रुपये मासिक (8 घण्टे के 368 रुपये);
अर्ध-कुशल श्रमिक 10,582 रुपये मासिक (8 घण्टे के 407 रुपये);
कुशल श्रमिक 11,622 रुपये मासिक (8 घण्टे के 447 रुपये)।

के ई एस एक्सपोर्ट (740 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) फैक्ट्री में बोर्ड पर ओवर टाइम दुगुनी दर से लिख रखा है लेकिन देते सिंगल रेट से हैं। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं।

साहनी एक्सपोर्ट (बी-144 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 6500-7000 रुपये, चैकर की 8500-9500, और टेलरों को 8 घण्टे के 330-340 रुपये। रोज सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम, ओवर टाइम सिंगल रेट से। ई एस आई तथा पी एफ 300 मजदूरों में 2-4 पुरानों के ही।

जे एन एस इन्सट्रुमेन्ट्स (4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में प्रैजेन्टी के 1000 रुपये और शिफ्ट अलाउन्स के 750 रुपये अप्रैल तथा मई महीनों के 30 जून तक नहीं दिये हैं। प्रैस शॉप में लगातार 16 घण्टे काम, ओवर टाइम के 100 घण्टे हो जाते हैं तो भी पैसे 80 घण्टे के ही देते हैं, भुगतान दुगुनी दर से है लेकिन अप्रैल तथा मई में किये ओवर टाइम के पैसे 30 जून तक नहीं दिये हैं।

प्रिमियर इण्डो प्लास्टिक (41 सैक्टर-4, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में होण्डा दुपहियों के पार्ट्स बनाते हैं। दो-तीन वरकर ही परमानेन्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

कृष्णा लेबल (162 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में सिर्फ स्टाफ कम्पनी ने स्वयं रखा है। सब मजदूर , 600 वरकर टेम्परेरी हैं।

फैशन फैक्ट्री (सी-68 ओखला फेज-2, दिल्ली) में सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

ब्रिजस्टोन इंडिया ऑटोमोटिव प्रोडक्ट्स (11 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 2014 की हड़ताल में सब परमानेन्ट और उस समय वाले टेम्परेरी वरकर निकाल दिये थे। अब 400 नये टेम्परेरी वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। रविवार, 5 जून को साँय 6 से अगली सुबह 6 की शिफ्ट में कम्पनी ने काम के लिये बुलाया था। रात दो बजे बिजली के झटके से श्याम इलेक्ट्रीशियन की फैक्ट्री में मृत्यु हो गई।

सुपर ऑटो (50 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 6600 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम सिंगल रेट से।

रजत इन्टरनेशनल (472 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 100 मजदूर, सैम्पलिंग ज्यादा, ई एस आई तथा पी एफ 30-40 की ही, ओवर टाइम सिंगल रेट से भी कम। प्रोडक्शन कार्य कापसहेड़ा और डुण्डाहेड़ा में। जयपुर, जोधपुर, बावल में भी कम्पनी की फैक्ट्रियाँ हैं। उत्पादन का निर्यात जापान को। कम्पनी बोनस देती ही नहीं।

एपेक्स सेक्युरिटी (मुख्यालय आर के पुरम, दिल्ली) गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30-31 दिन के , ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर , दिल्ली में गार्ड को 14500 रुपये। वर्ष में 2 शर्ट, 2 पैन्ट, 1 जोड़ी जूते कम्पनी देती है। ***थीटा इलेक्ट्रिक*** (82 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 6000 रुपये। ई एस आई व पी एफ 400 मजदूरों में 50 की ही हैं। डिप्लोमा और बी टेक वालों को अच्छी तनखा लगा देंगे कह कर रखते हैं और फिर 7500-7600 रुपये लगाते हैं। शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से।

(शेष पृष्ठ तीन पर)

लड़खड़ाते असहायता के दर्शन

असहायता के दर्शन-बेचारगी के फल्सफे-फिलॉसफीज ऑफ हैल्पलैसनैस (philosophies of helplessness) आदिम समुदायों की टूटन और ''मैं'' के उदय के साथ उभरे। मानव योनि में जन्म ही पतन, मनुष्य रूप में जन्म ही शाप। रहम की आस और कयामत की फिक्र व इन्तजार। जन्म से छुटकारा, मुक्ति-मोक्ष-निर्वाण ध्येय। पाप का साक्षात रूप स्त्री। आनन्ददायक नर-नारी सम्बन्ध पाप। काफी समय तक ''मैं'' के वाहक पुरुष। जन्म के पश्चात मृत्यु की निश्चितता ने पुरुषों को पगला दिया। पुरुषों की ऊल-जलूल हरकतों और औरतों के विरोधों ने नर-नारी की पूरकता के आनन्द को कटुता-कड़वाहट से भरा। सभ्यता के विकास-विस्तार के संग असहायता के दर्शन दुनिया-भर में फैले। ईश्वर-अल्लाह-गॉड की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। महान व्यक्ति-शक्तिशाली संगठन-सरकार माईबाप ही कुछ कर सकते हैं।

बेचारगी के फल्सफे ऊँच-नीच के वकील, अमीरी-गरीबी के पोषक। व्यवहार में विरोध की अनिवार्य आवश्यकता ने स्त्रियों-दासों-गुलामों-भूदासों-बन्धुआ लोगों-मेहनतकशों-किसानों-दस्तकारों-मजदूरों द्वारा असहायता के दर्शनों के इस-उस पहलू का विरोध करने को स्वाभाविक बनाया। इस सिलसिले में पौने दो सौ वर्ष पहले फैक्ट्री मजदूरों की दृष्टि से उभरे इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या वाले दर्शन ने बेचारगी के फल्सफों पर चौतरफा आक्रमण आरम्भ किया।

एक टापू में आरम्भ हुई फैक्ट्रियाँ पूरे संसार में फैल गई हैं। भौतिक उत्पादन में शुरू हुई फैक्ट्री-पद्धति सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में पसर गई है। इस दौरान विश्व के कोने-कोने में हर प्रकार की ऊँच-नीच को चुनौतियाँ बढती आई हैं। आज सब तरह के असहायता के दर्शन लड़खड़ाने लगे हैं।

ईश्वर-अल्लाह-गॉड ने जीवों में मनुष्यों को चुन कर श्रेष्ठ बनाया-बताया। असहायता के दर्शनों ने सब कुछ को मानवों के लिये घोषित किया और अंश द्वारा सम्पूर्ण पर प्रभुत्व के प्रयासों को प्रोत्साहित किया। मनुष्यों द्वारा पृथ्वी को मुट्ठी में लेने की कोशिशें, अंश द्वारा सम्पूर्ण पर प्रभुत्व के प्रयास इलेक्ट्रोनिक्स के इस दौर में सफलता के शिखर की तरफ बढ रहे हैं। और, नतीजे हमें घूरने लगे हैं : पृथ्वी पर जीवन ही दाँव पर लग गया है।

ऐसे में वैश्विक मजदूर, ग्लोबल वेज वरकर की वास्तविकता हमारे सम्मुख है और बदहवासियों को चुनौतियाँ दे रही है। मैं-हम सात अरब लोगों का एक अंश हैं। मेरे-हमारे पूर्वज सात अरब के पूर्वज हैं। मेरे-हमारे वारिस सात अरब के वारिस हैं। एकमेव और एकमय होना, unique and together होना मेरे-हमारे अस्तित्व का, जीवन का, जीवन्तता का, आनन्द का आधार है। अंश और सम्पूर्ण के बीच, मनुष्यों और प्रकृति के बीच प्रभुत्व-शत्रुता के स्थान पर सौहार्द मेरे-हमारे नये समुदायों का आधार है। हमारे पूर्वज रहे हैं, हमारे वारिस रहेंगे।

नर्मदा पोलीमर्स (18 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 150 स्त्री व पुरुष मजदूर सुबह 9 से साँय 7½ तक कार्य करते हैं। तनखा कम और देरी से, 15 से 25 तारीख के बीच। वाटर कूलर केवल स्टाफ के लिये।

के एच एम ड्राइव सिस्टम (121 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से। दो-दो रोबोट हैन्डल करने वाले वरकरों की तनखा 7600 रुपये। पे-स्लिप देते हैं और मई में भी ई एस आई व पी एफ राशि 5813 पर काटी है।

चेसिस ब्रेक्स (9 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में आई टी आई व डिप्लोमा ट्रेनी की सँख्या बढ कर 175 हो गई है। जलगाँव मुख्यालय से बन कर आती पे-स्लिप में ट्रेनी की तनखा 11500 रुपये दिखाते हैं पर यहाँ देते 8200 हैं। पी एफ के दोनों हिस्से ट्रेनी की तनखा से काटते हैं।

साझेदारी

★ छह महीने से 13 हजार की जगह मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापनी पड़ रही हैं। आई एम टी मानेसर में तीन स्थानों पर, उद्योग विहार गुड़गाँव और ओखला औद्योगिक क्षेत्र में एक-एक स्थान पर, फरीदाबाद में 13 जगहों पर मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। डाक द्वारा भी प्रतियाँ भेजी जाती हैं। इन्टरनेट के जरिये पी डी एफ रूप में भेजते हैं। नोएडा, बीकानेर, हिसार, चेन्नई, पुणे, बोकारो, भिवानी, लुधियाना, इलाहाबाद, नागपुर आदि स्थानों पर मजदूर समाचार की 5-10-20-50-100-150 प्रतियाँ मित्र बाँटते हैं। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

★ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। अलग से जो समय चर्चाओं के लिये निकालते हैं उसकी सूचना चन्द लोगों को ही दे पाते हैं। तब अधिकतर से मुलाकात अकस्मात-सी होती है। पहले से सोच-विचार करने, सहज चर्चा के लिये पहले से पता होना आवश्यक लगता है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ कर रहे हैं। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— शनिवार, 30 जुलाई को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास शुक्रवार, 29 जुलाई को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— सोमवार, 1 अगस्त को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

★ फरीदाबाद में जुलाई में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

कार्यस्थल की, रास्तों की, निवास स्थानों की रोचक बातें साझा करें सन्देश, चित्र, ऑडियो, वीडियो व्हाट्सएप पर भेज कर। व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

< baatein1@yahoo.co.uk >

ई-मेल के लिये बेहतर होगा जीमेल वाली आई डी का प्रयोग करें।

रूप ऑटो (439-440 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में सुबह 6½ से साँय 5 और साँय 5 से अगली सुबह 6½ की दो शिफ्ट। ओवर टाइम 50 रुपये प्रतिघण्टा। नाईट अलॉउन्स को प्रेजेन्टी में जोड़ कर फरवरी से 750 रुपये कर दिया है। पहले 2 छुट्टी पर प्रेजेन्टी के 400 रुपये कट जाते थे। अब हाफ डे पर कम्पनी पूरे 750 रुपये गायब कर देती है।

बिचौलियों की आज भूमिका

✶ 100 बोलते हैं तब हजार तरह की बातें बोलते हैं , हजार ढँग से बोलते हैं। हजार , लाख , करोड़ , सात अरब लोगों के बोलने का सिलसिला बढ रहा है।

✶ 500 से बातें कैसे हो सकती हैं ? चुन कर 5 को चर्चा के लिये भेजो ! जिन्हें चुन कर भेजते हैं वे ईमानदार बने रहते हैं तो मारे जाते हैं और बेईमान बन जाते हैं तो बेच खाने की कोशिशें करते हैं।

✶ स्वयं करने-मिल कर करने और प्रतिनिधि-नुमाइन्दे-रिप्रेजेन्टेटिव-नेता के जरिये करवाने के द्वन्द्व में लीडर पिट रहे हैं, प्रतिनिधियों का कचूमर निकल रहा है।

सब बिक जाते हैं। सब नेता चोर हैं। आज ऐसी बातें पृथ्वी के कोने-कोने में आम बातें हैं। फिर भी , बिचौलियों के लिये परिस्थितियाँ पैदा की जाती हैं — पैदा होती हैं।

✶ मजदूरों के बीच जोड़ फैक्ट्रियों पर से कम्पनियों के कब्जे को ढीला करते रहते हैं। बढते जोड़-तालमेल कम्पनियों के कब्जे हटाने के दायरों में पहुँचते रहते हैं। प्रतिक्रिया में नौकरी से निकालने और पुलिस कार्रवाई द्वारा बिचौलियों के लिये जगह बनाई जाती है। और, तत्काल राहत के लिये, निलम्बन-बरखास्तगी-गिरफ्तारी-केस में राहत के लिये मजदूर जब कानून-विधान-सरकार की तरफ देखने लगते हैं तब बिचौलियों के लिये जगह बन जाती है।

बिचौलियों के जरिये मजदूरों को राहत नहीं मिलती। राहत के फेर में मजदूरों को बिचौलिये थकाने वाली ज्ञापन-तारीख-धरना-प्रदर्शन-आश्वासन वाली राहों पर ले जाते हैं। बिचौलियों के जरिये कम्पनियों को राहत का एक और उदाहरण होण्डा टपुकड़ा है। और, बेलसोनिका मानेसर बिचौलियों के माध्यम से कम्पनियों को राहत का दूसरा उदाहरण है।

होण्डा टपुकड़ा

जिला अलवर , राजस्थान स्थित होण्डा फैक्ट्री में मजदूर हलचल का विवरण मजदूर समाचार के मार्च 2016 अंक में है।

टेम्परेरी और परमानेन्ट मजदूरों के उभार को थामने के लिये 16 फरवरी को पुलिस कार्रवाई द्वारा मजदूरों को फैक्ट्री से निकाला गया। फिर , बड़ी सँख्या में नये टेम्परेरी वरकरों की भर्ती और कुछ परमानेन्ट मजदूरों के जरिये कम्पनी ने फैक्ट्री को चालू रखा। दूसरी तरफ, फैक्ट्री से बाहर किये मजदूरों से बिचौलिये राहत के लिये गुड़गाँव, जयपुर, अलवर के चक्कर कटवाते रहे।

6 जून को राजस्थान सरकार के श्रमायुक्त की उपस्थिति में होण्डा मैनेजमेन्ट और यूनियनों के बीच समझौता हुआ। चार हजार के करीब जो मजदूर फैक्ट्री से बाहर हैं उनमें से 256 परमानेन्ट वरकर 8 जून को फैक्ट्री में काम करने जायेंगे। बाकी के बारे में 13 जून को श्रम विभाग में वार्ता होगी।

प्रैस विज्ञप्ति में यूनियन ने होण्डा मैनेजमेन्ट और श्रम विभाग को धन्यवाद दिया।

8 जून को समझौते अनुसार परमानेन्ट मजदूर फैक्ट्री के अन्दर काम करने गये।

और फिर , 13 जून को श्रम विभाग में वार्ता के लिये होण्डा मैनेजमेन्ट पहुँची ही नहीं। कम्पनी ने दो टूक कहा है कि फैक्ट्री से बाहर किये हजारों टेम्परेरी वरकरों में से एक को भी ड्युटी पर नहीं लेगी।

होण्डा टपुकड़ा फैक्ट्री के 102 परमानेन्ट मजदूर बरखास्त हैं और 47 निलम्बित हैं।

यूनियन ने होण्डा मैनेजमेन्ट के "मुकरने" के विरोध में 20 जून से फिर धरना-प्रदर्शन-ज्ञापन का सिलसिला आरम्भ किया है।

बेलसोनिका मानेसर

बेलसोनिका फैक्ट्री में गतिविधियों का विवरण मजदूर समाचार के जून 2016 अंक में है।

यूनियन कहती रही है : फैक्ट्री में शान्तिपूर्वक सामान्य उत्पादन, श्रम विभाग, न्यायालयों के द्वारा मजदूरों को बहुत कुछ मिलेगा। डेढ वर्ष से चल रही इन बातों के दौरान मजदूरों को कुछ मिलना तो दूर रहा , उल्टा कम्पनी ने कई परमानेन्ट, ट्रेनी, और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे मजदूरों को नौकरी से निकाला।

इधर जून में फैक्ट्री में कार्यरत मजदूरों ने यूनियन लीडरों से दो टूक कह दिया कि तत्काल राहत के लिये यूनियन फौरन कुछ करे अन्यथा मजदूर स्वयं करेंगे।

महीनों से 12 जुलाई वाली हाई कोर्ट में निर्णायक तारीख का इन्तजार करने को कह रही यूनियन ने बहुत माथापच्ची की। प्लान बनाया : न साँप मरे , न लाठी टूटे। उत्पादन प्रभावित नहीं हो, कम्पनी को नुक्सान नहीं हो, कम्पनी नाराज नहीं हो, इसलिये फैक्ट्री में साप्ताहिक अवकाश के दिन को चुना। "करने" पर भी खूब दिमाग लगाया। सरकारी अधिकारियों पर दबाव नहीं हो, तनाव नहीं हो, परेशानी नहीं हो, नाराज नहीं हों। रविवार का दिन बिलकुल फिट। तब बँटवाने के लिये 6000 पर्चे छपवाये। धारूहेड़ा, बावल , गुड़गाँव, फरीदाबाद, दिल्ली विश्वविद्यालय, आई एम टी मानेसर में चिपकवाने के लिये 1500 पोस्टर छपवाये। बेलसोनिका फैक्ट्री के अन्दर व बाहर वाले कई मजदूर जून-अन्त में यूनियन ने व्यस्त कर दिये।

रविवार को फैक्ट्री में छुट्टी। रविवार को सरकारी दफ्तर बन्द। इसलिये इन्कलाब-विन्कलाब के साथ बिचौलियों का

"कार्यक्रम : सामुहिक भूख हड़ताल।
स्थान : मिनी सचिवालय, गुड़गाँव।
समय : सुबह 9 से साँय 5 बजे तक।
दिनांक : 3 जुलाई 2016।"

✶ इक्के-दुक्के की बात यहाँ नहीं कर रहे। मजदूरों के समूहों की बात हो रही है। मजदूर समूह क्या नहीं करें यह साफ है। बाहर निकाल दिये जाने , गिरफ्तारियों , केसों की स्थितियों में कानून-विधान-सरकार की तरफ देखना मजदूर समूह के लिये दलदल में धँसते जाने की राह है।

इसलिये महत्वपूर्ण प्रश्न हैं : किसकी तरफ देखें ? किसके पास जायें ? किससे बात करें ? क्या-क्या करें ? हमारी तरफ से चर्चा आरम्भ करने के लिये कहेंगे : मजदूर अन्य मजदूरों की तरफ देखें, उनके पास जायें, उनसे बात करें। फैक्ट्री में, फैक्ट्रियों के बीच, औद्योगिक क्षेत्र में, औद्योगिक क्षेत्रों के बीच, और बस्तियों में मजदूरों के मजदूरों से बनते जोड़, तालमेल, मिल कर सोचने-करने के प्रस्थान-बिन्दू हैं। इन्हें बढाने की आवश्यकता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।